SANSKRIT

B.A. PROGRAMME OUTCOME

PO

1. विद्यार्थियों को लेखन, वाचन एवं अध्ययन की दृष्टि से भाषागत दक्षता प्राप्त होगी।
2. आत्मविश्वास से युक्त होंगे।
3. नैतिक एवं चारित्रिक उन्नति होगी।

PSo

1. संस्कृत भाषा के प्राचीन महत्व एवं उसकी वर्तमान प्रासंगिकता को समझेंगे।
2. संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं से परिचित होकर संस्कृत मर्मज्ञ बनेंगे।
3. संस्कृत व्याकरण के विभिन्न अंगों का ज्ञान प्राप्त कर शुद्ध अध्ययन, लेखन एवं उच्चारण की अभिव्यक्ति कौशल का विकास होगा।
4. भारतीय संस्कृति के धर्म, दर्शन, नीतिशास्त्र के मूल तत्वों को जानकर उत्तम चरित्रवान होंगे।

Co

बी0ए0 द्वितीय वर्ष

कोर्स– नाटक, नाट्य साहित्य और इतिहास

संस्कृत नाट्य इतिहास का परिचय एवं भारतीय संस्कृति का ज्ञान

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

नैतिक एवं चारित्रिक उत्कृष्टता का विकास, प्रकृति के प्रति प्रेम भावना का विकास सामाजिक परिस्थितियों का ज्ञान, संस्कृति का ज्ञान

कोर्स– गद्यकाव्य, व्याकरण निबंध, और गद्य साहित्य का परिचय

शुकनासोपदेश

राजनीति की शिक्षा

व्याकरण, निबंध

भाषा की रचना से संबंधित कौशल का विकास

गद्य साहित्य का परिचय

संस्कृतम गद्य साहित्य का ज्ञान, तात्कालिक संस्कृति का ज्ञान

बी0ए0 तृतीय वर्ष

ऋग्वैदिक सूक्त अग्नि, अक्ष संज्ञान

वैदिक देवताओं के स्वरूप का ज्ञान आत्मस्वरूप का ज्ञान

कठोपनिषद् (प्रथम अध्याय)

दार्शनिक चेतना का विकास, सही तथ्य की प्राप्ति करना

महाभारत (यक्ष–युधिष्ठिर संवाद)

सद्असद विवेक का ज्ञान, प्राचीन संस्कृति का ज्ञान

काव्यदीपिका–अलंकार एवं छंद

काव्य रचना कौशल का विकास काव्य शास्त्रीय सिद्धांतों के ज्ञान से

कोर्स– गद्य काव्य, नीतिकाव्य, व्याकरण और छंद

शिवराजविजयम् (प्रथम निश्वास)

ऐतिहासिक नायकों की गौरवगाथा का परिचय, राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान की भावना का विकास

नीतिशतकम्

सत्संगति, परोपकार, विद्या, विनय आदि सद्गुणों का चारित्रिक उत्कृष्टता हेतु विकास

संस्कृत व्याकरण कृदन्त प्रत्यय

भाषागत व्याकरण का ज्ञान तथा रचना कौशल विकास

एम0ए0 संस्कृत

1. विद्यार्थियों के लेखन, भाषा कौशल का विकास होगा
2. आत्मविश्वासी एवं नेतृत्व क्षमताधारी होगें।
3. चारित्रिक विकास के साथ–साथ भारतीयता के बोध से वैश्विक नागरिक के रूप में भावी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होंगे।
1. सर्वाधिक प्राचीन संस्कृत भाषा तथा उसके साहित्य से परिचित होंगे।
2. नाट्य, गद्य, पद्य विभिन्न साहित्यिक विधाओं के परिचय से कुशल लेखन, वाचन, बौद्धिक क्षमता का विकास होगा।
3. भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों को जानकर मानवीय मूल्यों से युक्त होंगे।
4. शोधपरक दृष्टि का विकास होगा।

एम0ए0

तृतीय सत्र

संहिता एवं निरूक्त

वैदिक संस्कृति का ज्ञान, वैदिक शब्दों की उत्पत्ति तथा उनके अर्थ का ज्ञान

ध्वनि तथा व्यंजना स्थापना एवं काव्यशास्त्रीय षट् प्रस्थान

काव्यशास्त्रीय तत्वों का ज्ञान प्राप्त करना

भाषा विज्ञान एवं संस्कृत व्याकरण

वैदिक एवं भारतीय भाषाओं की उत्पत्ति तथा विकास का ज्ञान, विभिन्न भाषाओं की विशेषताओं का ज्ञान

प्रायोगिकी एवं मौखिकी

वर्णोच्चारण विधान, योगासन एवं प्राणायाम, साहित्य से छंदो का संकलन, 14 माहेश्वर सूत्र एवं उनसे प्रत्याहार रचना, निबंध लेखन, बिब्लोग्राफी

वर्णों के उच्चारण का ज्ञान, योग का ज्ञान, व्याकरण रचना का ज्ञान, निबंध लेखन कौशल का विकास

चतुर्थ सत्र

भारतीय दर्शन

सृष्टि की उत्पत्ति संबंधी ज्ञान, आध्यात्मिक चेतना का विकास, मानसिक शांति के उपाय

धर्मशास्त्र एवं अर्थशास्त्र

राजनीति के गूढ़ रहस्यों का परिचय, भारतीय संस्कृति तथा धर्मशास्त्र के इतिहास का ज्ञान

ब्राह्मण प्रातिशाख्य एवं निरूक्त

वैदिक प्रातिशाख्यों से परिचय, राजा हरिश्चंद्र के साहित्यिक महत्व से परिचित कराना